NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 24-08-2024

विषय सूची

प्रधानमंत्री की यूक्रेन यात्रा

खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कीटनाशकों के उपयोग पर रोक लगाने की आवश्यकता

भारत, अमेरिका ने रक्षा सहयोग को बढ़ाने के लिए दो समझौतों पर हस्ताक्षर किए

भारत के सकल घरेलू उत्पाद में अंतरिक्ष क्षेत्र का योगदान

बांग्लादेश में अशांति के कारण भारत को इंजीनियरिंग शिपमेंट प्रभावित

सूखे के संदर्भ में 2023 में जलवायु की स्थिति रिपोर्ट

संक्षिप्त समाचार

मार्स्यांगडी नदी

हम्पी में विरुपाक्ष मंदिर

फिलाडेल्फी (सलाहद्दीन) कॉरिडोर

बोत्सवाना ने दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हीरा खोजा

रेल फोर्स वन: लौह कूटनीति का प्रतीक

पीएम-वाणी योजना

दीन दयाल स्पर्श योजना

पीएम-जनमन मिशन

सुभद्रा योजना

पसमांदा मुस्लिम

प्रधानमंत्री की यूक्रेन यात्रा

संदर्भ

- हाल ही में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने यूक्रेन की राजकीय यात्रा की।

परिचय

- 1991 में यूक्रेन के स्वतंत्र होने के पश्चात् किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली "ऐतिहासिक" यात्रा है।
- दोनों नेताओं ने भविष्य में द्विपक्षीय संबंधों को व्यापक साझेदारी से रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाने की दिशा में कार्य करने में आपसी रुचि व्यक्त की।
- इस यात्रा में चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।
    - चार समझौतों में उच्च क्षमता विकास परियोजनाओं के लिए भारत द्वारा मानवीय सहायता, कृषि और खाद्य उद्योग में सहयोग, सांस्कृतिक सहयोग तथा औषधि गुणवत्ता एवं विनियमन पर समझौता सम्मिलित हैं।
- यह तथ्य कि प्रधानमंत्री ने रूसी राष्ट्रपति से मिलने के लिए 8-9 जुलाई को रूस का दौरा किया तथा इसके बाद यूक्रेन का दौरा किया, उन्हें नेताओं के बीच सीधा संपर्क विकसित करने की एक अद्वितीय स्थिति में रखता है।

रूस-यूक्रेन युद्ध पर भारत का दृष्टिकोण

- भारत ने रूस पर प्रतिबंध लगाने के अमेरिकी नेतृत्व वाले पश्चिमी गुट के दृष्टिकोण से स्वयं को दूर रखने का निर्णय किया, लेकिन उसने मासूम बच्चों की हत्या पर "दिल दहला देने वाली" चिंता भी व्यक्त की।
- भारत ने रूस को बताया है कि "यह युद्ध का युग नहीं है"।
    - इससे यह संकेत प्राप्त हुआ कि भारत रूसी कार्रवाइयों को नजरअंदाज नहीं कर रहा है और यह बात पश्चिमी गुट की नजरों से छिपी नहीं है।
- भारत का दृढ़ विश्वास है कि युद्ध को समाप्त करने के लिए रूस और यूक्रेन को एक-दूसरे से वार्तालाप करनी चाहिए, न कि एक-दूसरे पर हमला करना चाहिए।

यात्रा का महत्व

- **ऐतिहासिक महत्व:** यह प्रथम यात्रा है जब किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने यूक्रेन की स्वतंत्रता के बाद वहां का दौरा किया है, जो दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों को मजबूत करने और सहयोग बढ़ाने के स्पष्ट उद्देश्य का संकेत है।
- **राजनयिक संतुलन अधिनियम:** रूस और पश्चिम के मध्य तनाव के बीच, भारत स्वयं को एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर रहा है जो दोनों पक्षों के साथ जुड़ने में सक्षम है, जिससे उसके राजनयिक लाभ में वृद्धि हो रही है।
- **वैश्विक दक्षिण पर प्रभाव:** यूक्रेन को आशा है कि यूक्रेन के मामले को सुनने और शांति प्रयासों में योगदान देने की भारत की इच्छा वैश्विक दक्षिण में राजनीतिक उतार-चढ़ाव को अलग दिशा देने में सहायता करेगी जो युद्ध से अलग खड़ा है, इसके बड़े आर्थिक परिणामों के बावजूद।
- **राजनयिक स्थान:** प्रधानमंत्री की यूक्रेन यात्रा एक संकेत है कि भारत अब दुनिया को नया रूप देने वाले संघर्ष में निष्क्रिय मूकदर्शक नहीं रहेगा।
    - यह उस समय के प्रमुख यूरोपीय और वैश्विक युद्ध को सक्रिय रूप से आकार देने के भारत के दृढ़ संकल्प को रेखांकित करता है।

- **जटिल भू-राजनीतिक परिस्थितियों का सामना करना:** यह यात्रा जटिल भू-राजनीतिक परिस्थितियों से निपटने तथा रूस, यूक्रेन और पश्चिमी देशों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने की भारत की क्षमता को प्रदर्शित करती है।

भारत-यूक्रेन संबंधों का अवलोकन

- भारत सरकार ने 1991 में यूक्रेन गणराज्य को एक संप्रभु देश के रूप में मान्यता दी और 1992 में राजनयिक संबंध स्थापित किए।
- **वाणिज्य और व्यापार संबंध:** पिछले 25 वर्षों में दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो 2021-22 में 3.386 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया है।
- **मानवीय सहायता:** यूक्रेन में चल रहे संघर्ष के कारण उत्पन्न मानवीय संकट को ध्यान में रखते हुए, भारत ने यूक्रेन और पड़ोसी देशों को मानवीय सहायता बढ़ाने का निर्णय किया।
- **अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर समर्थन:** भारत ने सामान्यतः अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर यूक्रेन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का समर्थन किया है। यूक्रेन ने वैश्विक राजनीति में भारत के संतुलित दृष्टिकोण की सराहना की है।

चुनौतियाँ और तनाव

- **हाल की मास्को यात्रा पर चिंताएं:** प्रधानमंत्री मोदी की हाल की रूस यात्रा की यूक्रेन ने आलोचना की है।
  - इससे वर्तमान यात्रा पर भी प्रभाव पड़ सकता है तथा रूस-यूक्रेन संघर्ष पर भारत के दृष्टिकोण और निष्पक्षता बनाए रखने की उसकी क्षमता पर प्रश्न उठ सकते हैं।
- **तटस्थता बनाम स्पष्ट समर्थन:** जबकि भारत ने यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता के लिए अपना समर्थन दोहराया है, तटस्थता का उसका दृष्टिकोण और रूस के कार्यों की स्पष्ट रूप से निंदा करने में अनिच्छा एक विवादास्पद मुद्दा बना हुआ है।
  - यह अस्पष्टता भारत की विश्वसनीयता और संप्रभुता एवं आक्रामकता के मामलों में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को प्रभावित करने की उसकी क्षमता को प्रभावित कर सकती है।

निष्कर्ष

- प्रधानमंत्री मोदी की यूक्रेन यात्रा जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत की रणनीतिक संतुलनकारी भूमिका को प्रदर्शित करती है।
- दोनों देशों के साथ बातचीत करके भारत का लक्ष्य यूक्रेन-रूस संघर्ष पर अपना स्वतंत्र दृष्टिकोण बनाए रखते हुए अपने द्विपक्षीय संबंधों को सशक्त करना है।
- इन यात्राओं के परिणाम संभवतः क्षेत्र में भारत की कूटनीतिक प्रगति को आकार देंगे और वैश्विक शांति एवं स्थिरता प्रयासों में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में इसकी भूमिका को आगे बढ़ाएंगे।

Source: TH

खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कीटनाशकों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता

सन्दर्भ

- भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने राज्यों से कीटनाशकों के उपयोग को कम करने तथा किसान स्तर पर कीटनाशकों के विनियमन हेतु रणनीति विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए एक अंतर-मंत्रालयी समिति गठित करने का आग्रह किया है।

कीटनाशकों के लाभ

- **फसल की पैदावार में वृद्धि:** फसलों को हानि पहुँचाने वाले कीटों को नियंत्रित करके, कीटनाशक किसानों को अधिक पैदावार और अधिक विश्वसनीय फसल प्राप्त करने में सहायता करते हैं।
- **आर्थिक दक्षता:** कीटनाशक फसल की हानि को कम करते हैं, जिससे खाद्य के मूल्यों में कमी होती हैं और खेती की लाभप्रदता बढ़ती है।
- **रोग की रोकथाम:** कुछ कीटनाशक मच्छरों जैसे रोगवाहकों को नियंत्रित करते हैं, जो मलेरिया और डेंगू बुखार जैसी बीमारियों को फैलाने के लिए उत्तरदायी हैं।
- **खरपतवार नियंत्रण:** शाकनाशी, एक प्रकार का कीटनाशक है, जो पोषक तत्वों और पानी के लिए फसलों के साथ प्रतिस्पर्धा करने वाली खरपतवार आबादी को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करता है।

समस्याएँ

- **पारिस्थितिकीय प्रभाव:** कीटनाशक गैर-लक्षित प्रजातियों को हानि पहुंचा सकते हैं, जिनमें मधुमक्खियों, तितलियों जैसे लाभकारी कीट और शिकारी कीट सम्मिलित हैं जो प्राकृतिक रूप से कीटों की आबादी को नियंत्रित करने में सहायता करते हैं।
- **मृदा स्वास्थ्य:** कीटनाशकों का लंबे समय तक उपयोग मिट्टी की उर्वरता के लिए आवश्यक सूक्ष्मजीवों को मारकर मिट्टी के स्वास्थ्य को खराब कर सकता है।
- **जल संदूषण:** कीटनाशक भूजल में घुल सकते हैं या सतही जल निकायों में बह सकते हैं, जिससे संदूषण हो सकता है।
- **मानव स्वास्थ्य जोखिम:** कीटनाशकों का अत्यधिक या अनुचित तरीके से उपयोग किए जाने पर, वे खाद्य उत्पादों में हानिकारक अवशेष छोड़ सकते हैं, जिससे उपभोक्ताओं के लिए महत्वपूर्ण स्वास्थ्य जोखिम उत्पन्न हो सकते हैं।
    - इन जोखिमों में तीव्र विषाक्तता, अंतःस्रावी व्यवधान, कैंसर और तंत्रिका संबंधी विकार जैसे दीर्घकालिक प्रभाव सम्मिलित हैं

सरकार के कदम

- **खाद्य सुरक्षा पर बल:** कीटनाशकों के उपयोग को विनियमित करने पर FSSAI का बल इन जोखिमों को न्यूनतम करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक मानकों के अनुरूप है।
    - FSSAI ने राज्यों के अंदर उन प्रमुख स्थानों की पहचान करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है, जहाँ मोबाइल लैब, जिन्हें "फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स" के नाम से जाना जाता है, तैनात की जा सकती हैं।

    - ये मोबाइल लैब उपभोक्ता जागरूकता बढ़ाने और खाद्य सुरक्षा प्रथाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी।
- **कीटनाशकों की अधिकतम अवशेष सीमा (MRLs):** कीटनाशकों की MRLs विभिन्न खाद्य वस्तुओं के लिए उनके जोखिम आकलन के आधार पर अलग-अलग तय की जाती है।
- **कीटनाशक अधिनियम, 1968:** कीटनाशकों को कृषि मंत्रालय द्वारा कीटनाशक अधिनियम, 1968 के तहत गठित केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड और पंजीकरण समिति (CIB & RC) के माध्यम से विनियमित किया जाता है।
    - CIB & RC कीटनाशकों के विनिर्माण, आयात, परिवहन, भंडारण को विनियमित करते हैं और तदनुसार कीटनाशकों को CIB & RC द्वारा पंजीकृत/प्रतिबंधित/प्रतिबंधित किया जाता है।
- भारतीय खाद्य सुरक्षा मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने जड़ी-बूटियों और मसालों में कीटनाशकों की अधिकतम अवशेष सीमा (MRL) को 0.01 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम (मिलीग्राम/किग्रा) से बढ़ाकर 0.1 मिलीग्राम/किग्रा निर्धारित की है।
    - मसालों और पाक-कला संबंधी जड़ी-बूटियों के लिए CODEX द्वारा निर्धारित MRLs 0.1 से 80 mg/kg तक है।
- FSSAI कोडेक्स एलिमेंटेरियस कमीशन (WHO और संयुक्त राष्ट्र के FAO द्वारा बनाया गया एक अंतर्राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता मानक निर्धारण निकाय) और यूरोपीय संघ द्वारा निर्धारित MRLs के अद्यतन मानकों के अनुरूप है।
- **अनुपम वर्मा समिति:** इसका गठन कृषि और किसान कल्याण विभाग द्वारा 66 कीटनाशकों की समीक्षा करने के लिए किया गया था, जो अन्य देशों में प्रतिबंधित/प्रतिबंधित हैं, लेकिन भारत में उपयोग के लिए पंजीकृत हैं।
- **जैविक खेती:** जैविक खेती में कीटनाशकों के उपयोग से बचा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप खाद्य उत्पाद हानिकारक रासायनिक अवशेषों से मुक्त होते हैं और उनमें आवश्यक पोषक तत्वों का स्तर अधिक होता है।
    - सरकार जैव कीटनाशकों के उपयोग को बढ़ावा दे रही है, जो सामान्यतः रासायनिक कीटनाशकों की तुलना में अधिक सुरक्षित होते हैं।
- FSSAI ने राज्य खाद्य सुरक्षा आयुक्तों को फलों और सब्जियों में कीटनाशकों के अवशेषों के बारे में जागरूकता अभियान चलाने को भी कहा है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- कीटनाशक आधुनिक कृषि में एक महत्वपूर्ण उपकरण बने हुए हैं, जो खाद्य सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता में योगदान करते हैं।
- हालांकि, पर्यावरणीय स्थिरता और मानव स्वास्थ्य के साथ कृषि उत्पादकता को संतुलित करने के लिए उनके उपयोग को सावधानीपूर्वक प्रबंधित किया जाना चाहिए।

Source: AIR

भारत, अमेरिका ने रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए दो समझौतों पर हस्ताक्षर किए

सन्दर्भ

- रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह चार दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर वाशिंगटन डीसी पहुंचे।

परिचय

- भारत और अमेरिका ने दो प्रमुख समझौतों पर हस्ताक्षर किए - एक गैर-बाध्यकारी आपूर्ति सुरक्षा व्यवस्था (SOSA) और दूसरा संपर्क अधिकारियों की नियुक्ति के संबंध में समझौता ज्ञापन।

आपूर्ति व्यवस्था की सुरक्षा(SOSA)

- SOSA अमेरिका और भारत को राष्ट्रीय रक्षा को प्रोत्साहन देने वाली वस्तुओं और सेवाओं के लिए पारस्परिक प्राथमिकता समर्थन प्रदान करने का अधिकार देगा।
- यह व्यवस्था दोनों देशों को राष्ट्रीय सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अप्रत्याशित आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों को हल करने के लिए एक दूसरे से आवश्यक औद्योगिक संसाधन प्राप्त करने में सक्षम बनाएगी।
- ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, डेनमार्क, एस्टोनिया, फिनलैंड, इजरायल, इटली, जापान, लातविया, लिथुआनिया, नीदरलैंड, नॉर्वे, कोरिया गणराज्य, सिंगापुर, स्पेन, स्वीडन और यूके के बाद भारत अमेरिका का 18वां SOSA भागीदार है। दोनों पक्षों ने रक्षा सहयोग को गहरा करने के लिए संपर्क अधिकारियों की नियुक्ति के संबंध में एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए।
    - इस समझौते का उद्देश्य आपसी हित के मामलों पर सहयोग, समझ, अंतरसंचालनीयता और सूचना के आदान-प्रदान को बढ़ाना है।

भारत और अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों का अवलोकन

- भारत की स्वतंत्रता के पश्चात्, संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंधों में शीत युद्ध युग के भारत के परमाणु कार्यक्रम पर अविश्वास और तनाव की स्थिति बनी हुई है।
    - हाल के वर्षों में संबंधों में प्रगाढ़ता आई है तथा विभिन्न आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सहयोग मजबूत हुआ है।
- **द्विपक्षीय व्यापार:** 2017-18 और 2022-23 के बीच दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार में 72 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
    - वर्ष 2021-22 के दौरान भारत में सकल FDI प्रवाह में अमेरिका का योगदान 18 प्रतिशत रहा, जो सिंगापुर के बाद दूसरे स्थान पर है।
- **रक्षा और सुरक्षा:** भारत और अमेरिका ने गहन सैन्य सहयोग के लिए तीन "आधारभूत समझौतों" पर हस्ताक्षर किए हैं, जिनकी शुरुआत 2016 में लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA) से हुई, इसके बाद 2018 में पहली 2+2 वार्ता के बाद संचार संगतता और सुरक्षा समझौता (COMCASA) और फिर 2020 में बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट (BECA) पर हस्ताक्षर किए गए।
    - 2016 में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारत को एक प्रमुख रक्षा साझेदार का दर्जा दिया, जो दर्जा किसी अन्य देश को प्राप्त नहीं है।
- **अंतरिक्ष:** भारत द्वारा हस्ताक्षरित आर्टेमिस समझौते ने समस्त मानव जाति के लाभ के लिए अंतरिक्ष अन्वेषण के भविष्य के लिए एक साझा दृष्टिकोण स्थापित किया।
    - संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत द्विपक्षीय नागरिक अंतरिक्ष संयुक्त कार्य समूह के माध्यम से सहयोग करते हैं।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका बहुपक्षीय संगठनों और मंचों में निकटता से सहयोग करते हैं, जिनमें संयुक्त राष्ट्र, G-20, दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (ASEAN) से संबंधित मंच, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन सम्मिलित हैं।

- ऑस्ट्रेलिया एवं जापान के साथ मिलकर, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा भारत एक स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए एक कूटनीतिक नेटवर्क, क्वाड के रूप में एकत्रित हुए हैं।

- **परमाणु सहयोग:** असैन्य परमाणु समझौते पर 2005 में हस्ताक्षर किए गए थे, इस समझौते के तहत भारत अपनी असैन्य तथा सैन्य परमाणु सुविधाओं को अलग करने तथा अपने सभी असैन्य संसाधनों को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) के सुरक्षा उपायों के अंतर्गत रखने पर सहमत है।
  - बदले में, संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के साथ पूर्ण असैन्य परमाणु सहयोग की दिशा में कार्य करने पर सहमत है।

चुनौतियाँ

- **भारत की स्वयं सामरिक स्वायत्तता को प्राथमिकता:** जबकि अमेरिका के साथ उसका सम्बन्ध दृढ, गहरा और व्यापक होता जा रहा है, भारत अपनी सामरिक स्वायत्तता को बनाए रखने की आवश्यकता से भी परिचित है।
- **विरोधाभासी स्थितियाँ:** 2022 में यूक्रेन पर रूसी आक्रमण की भारत की दबी हुई आलोचना ने पश्चिम में कुछ निराशा उत्पन्न की, जिससे सुरक्षा साझेदार के रूप में भारत की विश्वसनीयता पर प्रश्न उठे।
- **रूस के साथ रक्षा संबंध:** संयुक्त राज्य अमेरिका ने S-400 वायु रक्षा प्रणाली जैसे हथियारों की नई धाराओं के बारे में विशेष चिंता व्यक्त की है, क्योंकि वे रूसी शक्ति को प्रोत्साहन देते हैं, अमेरिकी और भारतीय सेनाओं के बीच अंतर-संचालन तथा सुरक्षित संचार की संभावनाओं को कम करते हैं, और वर्तमान संवेदनशील हथियार प्रौद्योगिकियों को साझा करने से रोकते हैं।

निष्कर्ष

- भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका को मध्य विकसित होते सम्बन्ध 21वीं सदी की वैश्विक व्यवस्था को आकार देने में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।
- इस साझेदारी की पूरी क्षमता को उजागर करने के लिए, दोनों सरकारों को द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय बाधाओं को कम करने और एक व्यापक एवं रणनीतिक वैश्विक गठबंधन के लिए एक मार्ग तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- दोनों सेनाओं के मध्य सहयोग के तंत्र को मजबूत करना तेजी से आक्रामक होते चीन के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

Source: IE

भारत के सकल घरेलू उत्पाद में अंतरिक्ष क्षेत्र का योगदान

सन्दर्भ

- भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र ने पिछले दशक में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 24 बिलियन डॉलर (20,000 करोड़ रुपये) का प्रत्यक्ष योगदान दिया है।

भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र

- भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र को कई दशकों के लगातार निवेश से लाभ प्राप्त हुआ है, पिछले दशक में इसमें 13 बिलियन डॉलर का निवेश किया गया है।

- यह विश्व की 8वीं सबसे बड़ी अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था (वित्त पोषण के संदर्भ में) है।
- हाल ही में घोषित 2024-25 के केंद्रीय बजट में भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र को उल्लेखनीय प्रोत्साहन मिला है। केंद्र सरकार ने अंतरिक्ष से संबंधित पहलों को समर्थन देने के लिए ₹13,042.75 करोड़ आवंटित किए हैं।

भारत के सकल घरेलू उत्पाद में अंतरिक्ष क्षेत्र का योगदान

- इस क्षेत्र ने सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में 96,000 रोजगार का सृजन किया है।
- अंतरिक्ष क्षेत्र द्वारा उत्पादित प्रत्येक डॉलर के लिए, भारतीय अर्थव्यवस्था पर $2.54 का गुणक प्रभाव पड़ा और भारत का अंतरिक्ष बल देश के व्यापक औद्योगिक कार्यबल की तुलना में 2.5 गुना अधिक उत्पादक था।
- भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र में विविधता आ रही थी और अब इसमें 200 स्टार्ट-अप सहित 700 कंपनियाँ थीं ।
- 2023 में राजस्व बढ़कर $6.3 बिलियन हो गया था, जो वैश्विक अंतरिक्ष बाज़ार का लगभग 1.5% था।
- उपग्रह संचार ने अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में 54% योगदान दिया, इसके बाद नेविगेशन (26%) और प्रक्षेपण (11%) का स्थान रहा।
  - अंतरिक्ष क्षेत्र द्वारा समर्थित मुख्य उद्योग दूरसंचार (25%), सूचना प्रौद्योगिकी (10%) और प्रशासनिक सेवाएं (7%) थे।

अंतरिक्ष क्षेत्र में FDI

- संशोधित FDI नीति के अंतर्गत अंतरिक्ष क्षेत्र में 100% FDI की अनुमति है। विभिन्न गतिविधियों के लिए प्रवेश मार्ग इस प्रकार हैं:
  - **स्वचालित मार्ग के अंतर्गत 74% तक:** उपग्रह-विनिर्माण एवं संचालन, उपग्रह डेटा उत्पाद तथा भू-खंड एवं उपयोगकर्ता खंड।
  - **स्वचालित मार्ग के अंतर्गत 49% तक:** प्रक्षेपण यान और संबंधित प्रणालियाँ या उप-प्रणालियाँ, अंतरिक्ष यान के प्रक्षेपण और प्राप्ति के लिए स्पेसपोर्ट का निर्माण।
  - **स्वचालित मार्ग के अंतर्गत 100% तक:** उपग्रहों, भू-खंड और उपयोगकर्ता खंड के लिए घटकों और प्रणालियों/उप-प्रणालियों का विनिर्माण।

अंतरिक्ष क्षेत्र की संभावनाएं

- **निर्यात क्षमता और निवेश:** वर्तमान में, अंतरिक्ष से संबंधित सेवाओं में भारत का निर्यात बाजार भाग ₹2,400 करोड़ (लगभग $0.3 बिलियन) है। इसे बढ़ाकर ₹88,000 करोड़ ($11 बिलियन) करने का लक्ष्य है।
- **अंतरिक्ष पर्यटन का उदय:** 2023 में, अंतरिक्ष पर्यटन बाजार का मूल्य $848.28 मिलियन था।
  - 2032 तक इसके 27,861.99 मिलियन डॉलर तक बढ़ने की आशा है।

भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में चुनौतियाँ

- **प्रतिस्पर्धा और वैश्विक बाजार हिस्सेदारी:** वैश्विक बाजार हिस्सेदारी के 8% के इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, भारतीय अंतरिक्ष कंपनियों को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर प्रभावी रूप से प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए।
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी:** जबकि निजी क्षेत्र ने रुचि दिखाई है, अधिक पर्याप्त निवेश और प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

- **प्रौद्योगिकी विकास और नवाचार:** पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण वाहनों, लघु उपग्रहों और उन्नत प्रणोदन प्रणालियों जैसी अत्याधुनिक तकनीकों को विकसित करने के लिए पर्याप्त निवेश तथा अनुसंधान की आवश्यकता होती है।
- **नियामक ढांचा और लाइसेंसिंग:** लाइसेंसिंग प्रक्रियाओं, निर्यात नियंत्रण और अनुपालन का मार्गनिर्देशन करना जटिल हो सकता है।
- **बुनियादी ढांचे और सुविधाएं:** इस तरह के बुनियादी ढांचे को विकसित करने और बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण पूंजी की आवश्यकता होती है।

भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में प्रमुख सुधार

- **भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023:** इसमें इसरो, न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL) और निजी क्षेत्र की संस्थाओं जैसे संगठनों की भूमिकाएं तथा जिम्मेदारियां निर्धारित की गईं।
  - इसका उद्देश्य अनुसंधान, शिक्षा, स्टार्टअप और उद्योग की भागीदारी को बढ़ाना है।
- **SIA द्वारा रणनीतिक प्रस्ताव:** अंतरिक्ष उद्योग संघ – भारत (SIA-इंडिया) ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए अपने पूर्व-बजट ज्ञापन में भारत के अंतरिक्ष बजट में पर्याप्त वृद्धि का प्रस्ताव किया है।
  - इसका उद्देश्य भारत के विस्तारित अंतरिक्ष कार्यक्रम को प्रोत्साहन देना, निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देना, तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देना और देश को गतिशील वैश्विक अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित करना है।

आगे की राह

- भारत का लक्ष्य 2035 तक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) को चालू करना और 2040 तक भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर उतारना है।
- निजी संस्थाएँ अब रॉकेट और उपग्रहों के अनुसंधान, विनिर्माण तथा निर्माण के महत्वपूर्ण पहलुओं में सक्रिय रूप से सम्मिलित हैं, जो नवाचार के एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा दे रही हैं।
- इससे भारतीय कंपनियों को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करने की उम्मीद है। इससे कंपनियाँ देश के अन्दर अपनी विनिर्माण सुविधाएँ स्थापित कर सकेंगी, जिससे सरकार की 'मेक इन इंडिया (MII)' और 'आत्मनिर्भर भारत' पहल को बढ़ावा मिलेगा।

Source: TH

बांग्लादेश में अशांति के कारण भारत को इंजीनियरिंग शिपमेंट प्रभावित

सन्दर्भ

- भारतीय इंजीनियरिंग निर्यात संवर्धन परिषद (EEPC) के अनुसार, पड़ोसी देश में हाल की अशांति के कारण बांग्लादेश को भारत के इंजीनियरिंग सामान निर्यात को बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा है।

भारत का इंजीनियरिंग निर्यात प्रदर्शन

- कुल सकल घरेलू उत्पाद में 3% की हिस्सेदारी के साथ, भारतीय इंजीनियरिंग क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण आधार है।
- इंजीनियरिंग क्षेत्र भारत के कुल निर्यात में 24% की हिस्सेदारी के साथ सबसे बड़ा योगदानकर्ता है और कुल विनिर्माण निर्यात में लगभग 40% का योगदान देता है।

- वित्त वर्ष 2023-24 में इंजीनियरिंग निर्यात 2.13% बढ़कर 109.32 बिलियन अमेरिकी डॉलर पर पहुंच गया, जो कि व्यापारिक निर्यात की प्रवृत्ति के विपरीत है जिसमें 3.11% की गिरावट आई है।
- कमजोर वैश्विक व्यापार प्रवृत्तियों, घटती मांग, विदेशी मुद्रा संकट और भू-राजनीतिक संघर्षों को देखते हुए इसने अच्छा प्रदर्शन किया।

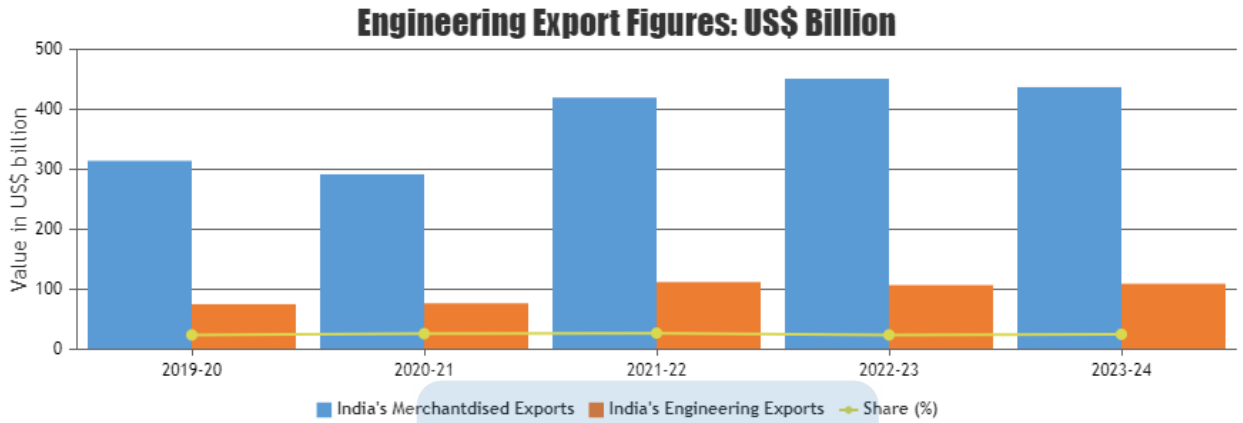

- आज, कुल इंजीनियरिंग निर्यात में से, उपभोक्ता सतत वस्तुओं का अनुपात 1956-57 में 34% से घटकर 2023-24 में 9% हो गया है, जबकि पूंजीगत वस्तुओं का अनुपात 1956-57 में 12% से बढ़कर 2023-24 में 60% हो गया है।

निर्यात गंतव्य

- भारत निम्नलिखित क्षेत्रों में इंजीनियरिंग उत्पादों का निर्यात करता है: आसियान, उत्तर-पूर्व एशिया, अफ्रीका, यूरोपीय संघ, उत्तरी अमेरिका, CIS, लैटिन अमेरिका, दक्षिण एशिया, अफ्रीका, मध्य पूर्व, पश्चिम एशिया, आदि।

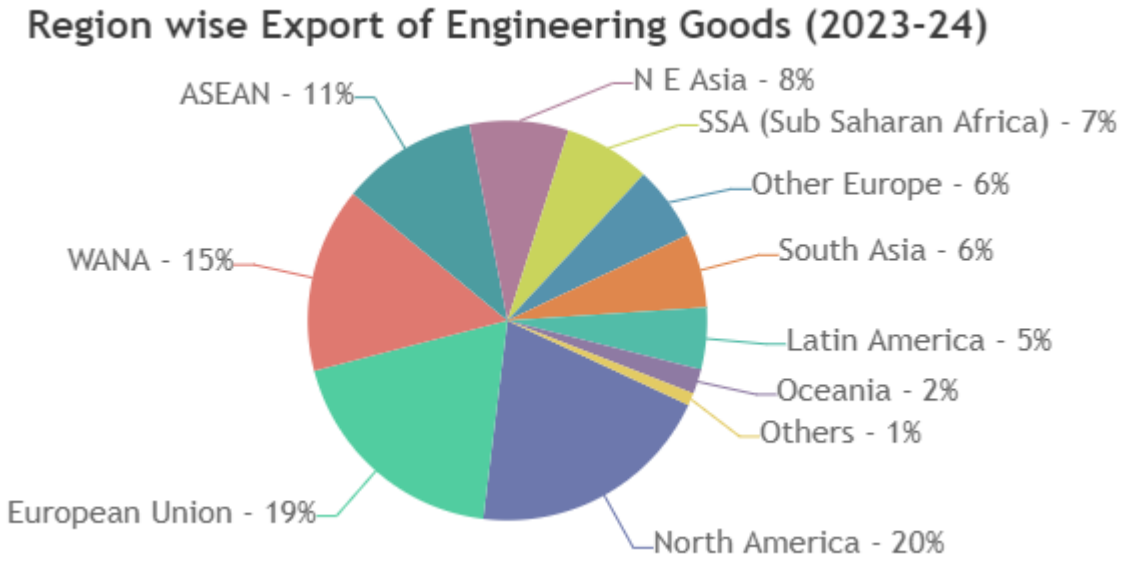

- भारत के इंजीनियरिंग निर्यात ने जनवरी 2024 में लगातार दूसरे महीने 4.20% की वृद्धि के साथ अपनी साल-दर-साल वृद्धि जारी रखी, जिसका श्रेय लोहा और इस्पात, विमान, अंतरिक्ष यान और भागों, तांबे तथा तांबे के उत्पादों एवं इलेक्ट्रिक मशीनरी के शिपमेंट में वृद्धि को दिया गया।
    - इसके अतिरिक्त, दक्षिण एशिया, यूरोपीय संघ और उत्तरी अमेरिका से बढ़ी मांग ने भी इस वृद्धि में योगदान दिया।

बांग्लादेश में हाल की अशांति के बाद चिंताएं

- **निर्यात में गिरावट:** वर्ष के पहले चार महीनों में, बांग्लादेश को भारत के इंजीनियरिंग सामान निर्यात में 9% की गिरावट दर्ज हुई।
    - इसने उस उद्योग के लिए चिंताएं उत्पन्न कर दी हैं, जो भारत के वस्तु निर्यात का एक चौथाई भाग है।
- **आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान:** बांग्लादेश में चल रही अशांति के कारण आपूर्ति श्रृंखला बाधित हो गई है, जिससे दोनों देशों के बीच वस्तुओं का सुचारू प्रवाह प्रभावित हुआ है।
    - परिणामस्वरूप, भारतीय निर्यातकों को अपने बांग्लादेशी समकक्षों को इंजीनियरिंग उत्पाद भेजने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।
- **राजस्व घाटा और अनिश्चितता:** इस स्थिति ने भारतीय निर्यातकों के लिए राजस्व घाटे का खतरा बढ़ा दिया है। इंजीनियरिंग सामान भारत के निर्यात पोर्टफोलियो का एक महत्वपूर्ण भाग है, इसलिए किसी भी व्यवधान के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं।
- **विशिष्ट निर्यात श्रेणियाँ:** अप्रैल से जुलाई के बीच भारत से इंजीनियरिंग सामान के कुल निर्यात में 4.2% की वृद्धि हुई, जबकि लोहा और इस्पात के निर्यात में 31.6% की तीव्र गिरावट आई।
    - इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र के कई शीर्ष निर्यात बाजारों - जिनमें इटली, कोरिया, नेपाल और बांग्लादेश सम्मिलित हैं - में इस अवधि के दौरान भारतीय वस्तुओं के प्रति रुचि कम हुई।
- **प्रतिकारी कारक:** बांग्लादेश को निर्यात में गिरावट के बावजूद, अन्य जगहों पर सकारात्मक रुझान देखने को मिले। संयुक्त अरब अमीरात (UAE) को निर्यात में लगभग 44% की वृद्धि देखी गई और सऊदी अरब को निर्यात में 33% की वृद्धि हुई।
    - इन दोनों देशों ने संयुक्त रूप से 4.4 बिलियन डॉलर मूल्य के भारतीय इंजीनियरिंग सामान का आयात किया, जो संयुक्त राज्य अमेरिका को निर्यात किये गये 6.1 बिलियन डॉलर के बाद दूसरे स्थान पर है।
- **वैश्विक प्रभाव:** बांग्लादेश में अशांति ने न केवल भारतीय निर्यातकों को प्रभावित किया है, बल्कि विश्व भर के निर्यातकों को भी अत्यंत हानि हुई है।
    - हिंसा और विरोध प्रदर्शनों के कारण आयात बाधित हुआ, जिससे सीमा पार व्यापार के लिए चुनौतियां उत्पन्न हुईं।

सरकारी पहल

- 2019 में, सरकार ने आगामी पांच वर्षों में बुनियादी ढांचे के विकास में 100 लाख करोड़ रुपये (1.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर) के निवेश की घोषणा की।
- अंतरिम केंद्रीय बजट 2024-25 में, सरकार ने परिवहन बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए 11,11,111 करोड़ रुपये (133 बिलियन अमेरिकी डॉलर) आवंटित करके बुनियादी ढांचा क्षेत्र को काफी बढ़ावा दिया।

- भारत सरकार ने विभिन्न निर्यात संवर्धन योजनाओं को लागू किया है, जैसे कि शून्य शुल्क निर्यात संवर्धन पूंजीगत सामान (EPCG) योजना, निर्यात उत्कृष्टता के शहर (TEE), बाजार पहुंच पहल (MAI), आदि, जिसका उद्देश्य निर्यातक को प्रोत्साहित करना और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से राजस्व बढ़ाने में मदद करना है।
- कच्चे माल के आयात को सुलभ बनाने के लिए शुल्क छूट, अग्रिम प्राधिकरण, शुल्क मुक्त आयात, सेवा कर पर छूट आदि जैसी योजनाएं लागू की गई हैं।
- भारत ने घरेलू इंजीनियरिंग सामान विनिर्माण फर्मों की प्रतिस्पर्धात्मकता को समर्थन देने और बढ़ाने के लिए विभिन्न पहल की हैं जैसे 'मेक इन इंडिया' पहल, ऑटोमोबाइल और ऑटो घटकों के लिए PLI योजना, उन्नत रसायन सेल (SCC) बैटरी स्टोरेज पर राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए PLI योजना, फेम इंडिया II योजना, पूंजीगत वस्तु योजना, उद्योग 4.0।

निष्कर्ष

- बांग्लादेश में हाल ही में हुई अशांति का भारत के इंजीनियरिंग निर्यात पर ठोस प्रभाव पड़ा है, जिससे दोनों देशों के बीच स्थिर व्यापार संबंधों के महत्व पर बल दिया है।
- जैसे-जैसे स्थिति विकसित होती है, निर्यातकों को आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधानों को कम करने के लिए अनुकूलन और तरीके खोजने की आवश्यकता होगी।

क्या आप जानते हैं?
भारत जून 2014 में वाशिंगटन समझौते का स्थायी सदस्य बन गया और अब वह उन 17 देशों के विशिष्ट समूह का भाग है, जो वाशिंगटन समझौते के स्थायी हस्ताक्षरकर्ता हैं। वाशिंगटन समझौता इंजीनियरिंग अध्ययन और इंजीनियरों की गतिशीलता पर एक विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय समझौता है।

Source: TH

सूखे के संदर्भ में 2023 में जलवायु की स्थिति पर रिपोर्ट

समाचार में

राष्ट्रीय महासागरीय एवं वायुमंडलीय प्रशासन (NOAA) द्वारा 2023 में जलवायु की स्थिति पर रिपोर्ट जारी की गई।

मुख्य निष्कर्ष

- **अत्यधिक सूखा:** जुलाई 2023 में 8% वैश्विक भूमि क्षेत्र अत्यधिक सूखे के अधीन होने के साथ एक नया रिकॉर्ड स्थापित हुआ, जो जुलाई 2022 के 6.2% के पिछले उच्च स्तर को पार कर गया।
- **वैश्विक सूखा:** 29.7% वैश्विक भूमि ने मध्यम या बदतर सूखे का अनुभव किया, यह एक अन्य रिकॉर्ड तोड़ने वाला आँकड़ा है।
- **तापमान:** 2023 रिकॉर्ड पर सबसे गर्म वर्ष था, जिसमें वैश्विक सतह का तापमान 1991-2020 के औसत से 0.55-0.60°C अधिक था।
- **ग्रीनहाउस गैसें:** कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुँच गए।
- **महासागरीय गर्मी:** 2,000 मीटर गहराई तक वैश्विक महासागरीय गर्मी सामग्री ने नए रिकॉर्ड बनाए।
- **समुद्र का स्तर:** वैश्विक औसत समुद्र का स्तर 1993 के औसत से 4 इंच (10 सेमी) ऊपर पहुँच गया, जो लगातार 12वें वर्ष रिकॉर्ड उच्च स्तर पर है।

- **चक्रवात:** उष्णकटिबंधीय चक्रवात की गतिविधि 82 नामित तूफानों के साथ औसत से कम थी, लेकिन संचित चक्रवात ऊर्जा औसत से अधिक थी, जिसमें सात से अधिक तूफान श्रेणी 5 तक पहुंच गए।

क्षेत्रीय प्रभाव:

- मेक्सिको में 1950 के पश्चात से सबसे सूखा और सबसे गर्म वर्ष रहा।
- दक्षिण अमेरिका, पश्चिम एशिया और यूरोप में अत्यधिक सूखा पड़ा।
- **जंगल में आग:** कनाडा में अब तक का सबसे खराब जंगल में आग लगी, जिसमें 15 मिलियन हेक्टेयर जंगल जल गया; ग्रीस में भी रिकॉर्ड जंगल में आग लगी, जिसमें दीर्घ अवधि के औसत से चार गुना ज़्यादा जंगल जल गए।
- **ऑस्ट्रेलिया:** उत्तरी क्षेत्र में व्यापक जंगल की आग के साथ रिकॉर्ड तीन महीने की सबसे शुष्क अवधि का अनुभव किया।
- **आर्कटिक:**रिकॉर्ड पर चौथा सबसे गर्म वर्ष; पिघलती हुई पर्माफ्रॉस्ट और पांचवीं सबसे छोटी मौसमी समुद्री बर्फ सीमा देखी गई।
- **अंटार्कटिका:** समुद्री बर्फ के दायरे और क्षेत्र में आठ महीनों में रिकॉर्ड कम तापमान देखा गया, 21 फरवरी, 2023 को यह अब तक के सबसे कम तापमान पर पहुंच गया।

Source : DTE

संक्षिप्त समाचार

मार्सयांगडी नदी

सन्दर्भ

- हाल ही में, लगभग 40 यात्रियों को ले जा रही एक भारतीय पर्यटक बस, राजमार्ग से भटक कर नेपाल के तनहुँ जिले में तेजी से बहती मार्सयांगडी नदी में गिर गई, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न लोगों की मृत्यु हो गई और अनेक घायल हो गए।

मार्शयांगडी नदी के बारे में

- यह नेपाल में अन्नपूर्णा पर्वतमाला के उत्तर-पश्चिम में 3,600 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, जहाँ खंगसर खोला और झारसंग खोला पर्वत नदियाँ मिलती हैं।
- यह मनांग जिले से पूर्व की ओर बहती है, फिर दक्षिण की ओर लामजुंग जिले से होकर बहती है और अंततः मुगलिंग के पास त्रिशूली नदी में सहायक नदी के रूप में मिल जाती है।
- यह गंडकी नदी प्रणाली का भाग है, जिसे नारायणी के नाम से भी जाना जाता है। इसकी सहायक नदियाँ नागदी खोला, दोरदी खोला, चेपे खोला, चुंडी खोला और दारौदी आदि हैं।

Source: DD News

हम्पी में विरुपाक्ष मंदिर

सन्दर्भ

- हम्पी का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस वर्ष की शुरुआत में मूसलाधार बारिश के कारण हम्पी के विरुपाक्ष मंदिर का मंडप 'सालू मंडप' गिर गया था।

हम्पी के विरुपाक्ष मंदिर के बारे में

- यह भारत के कर्नाटक राज्य के हम्पी में स्थित है।
- इसका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व बहुत अधिक है और यह हम्पी के स्मारकों के समूह का भाग है, जिसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।

ऐतिहासिक महत्व

- इसका इतिहास 7वीं शताब्दी ई. का है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह विजयनगर साम्राज्य द्वारा हम्पी में अपनी राजधानी स्थापित करने से भी पहले से उपस्थित था।
- 14वीं से 16वीं शताब्दी के दौरान, विजयनगर शासकों के अधीन, मंदिर का व्यापक विस्तार हुआ और यह धार्मिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित हुआ।
    - विजयनगर साम्राज्य की स्थापना संगम वंश के राजा हरिहर प्रथम ने की थी, यह तुंगभद्रा नदी के तट पर एक रणनीतिक स्थान से विस्तारित होकर अपने समय के सबसे शक्तिशाली साम्राज्यों में से एक बन गया।

वास्तुकला के चमत्कार

- विजयनगर साम्राज्य (1336 से 1646), जो अपनी भव्य वास्तुकला के लिए जाना जाता है, ने हम्पी में द्रविड़ शैली के मंदिर और महल बनवाए, जिनमें विरुपाक्ष मंदिर भी सम्मिलित है।
- उल्लेखनीय विशेषताओं में विशाल गोपुरम (प्रवेश द्वार), स्तंभों वाले हॉल और विभिन्न देवताओं को समर्पित मंदिर सम्मिलित हैं।
- परिसर के अंदर विठ्ठल मंदिर अपनी उत्कृष्ट अलंकृत संरचना के लिए जाना जाता है, जो विजयनगर मंदिर वास्तुकला के शिखर का प्रतिनिधित्व करता है।
    - इसमें एक भव्य बाज़ार सड़क, एक सीढ़ीदार तालाब और सुंदर नक्काशीदार मंडप हैं।

धार्मिक महत्व

- यह मंदिर भगवान शिव के एक रूप भगवान विरुपाक्ष को समर्पित है।
- यह तुंगभद्रा नदी से जुड़ी स्थानीय देवी पंपादेवी से जुड़ा हुआ है।
- विरुपाक्ष मंदिर में पूजा सदियों से जारी है, यहाँ तक कि 1565 में शहर के विनाश के बाद भी।

Source: IE

फिलाडेल्फ़ी (सलाहेद्दीन) गलियारा

समाचार में

मिस्र के साथ गाजा पट्टी की सीमा पर भूमि का एक संकरा क्षेत्र वार्ता में मुख्य बाधा बनकर उभरा है।

कॉरिडोर के बारे में

- यह मिस्र के साथ गाजा की सीमा पर 14 किलोमीटर लंबा क्षेत्र है और यह इजरायल तथा हमास के बीच युद्ध विराम वार्ता का केंद्र है।
- इसे इजरायली सेना ने तब बनाया था जब 1967 और 2005 के बीच गाजा पर इजरायल का सीधा कब्ज़ा था।
    - अमेरिका की मध्यस्थता में 1979 में हुआ समझौता इजरायल और किसी अरब देश के मध्य पहली शांति संधि थी।
- इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू हमास को फिर से हथियारबंद होने से रोकने के लिए गलियारे पर स्थायी इजरायली नियंत्रण पर बल देते हैं।
- हमास गलियारे सहित गाजा से पूरी तरह इजरायली वापसी की मांग करता है।
- इजरायल एवं मिस्र के बीच 2005 में हुए एक समझौते ने गलियारे को गाजा की आवाजाही और तस्करी के प्रबंधन के लिए एक बफर जोन के रूप में स्थापित किया।
- इजरायल की 2005 की वापसी के बाद, मिस्र और फिलिस्तीनी प्राधिकरण ने इस क्षेत्र का प्रबंधन किया, लेकिन 2007 में हमास ने नियंत्रण कर लिया।
- गलियारे का प्रयोग विभिन्न सुरंगों के माध्यम से हथियारों और सामान सहित तस्करी के लिए किया गया है।
- मिस्र ने विभिन्न सुरंगों को नष्ट कर दिया है और इजरायली नियंत्रण को समझौतों का उल्लंघन मानता है।

Source:Th

बोत्सवाना ने विश्व का दूसरा सबसे बड़ा हीरा खोजा

समाचार में

विश्व का दूसरा सबसे बड़ा 2,492 कैरेट का हीरा बोत्सवाना में एक कनाडाई कंपनी लुकारा डायमंड की खदान में खोजा गया है।

- सबसे बड़ा हीरा - 3,106 कैरेट - 1905 में दक्षिण अफ्रीका में पाया गया था, जिसे कलिनन डायमंड के नाम से भी जाना जाता है।

बोत्सवाना

- यह दक्षिणी अफ्रीकी क्षेत्र में स्थित है।
- यह भौगोलिक दृष्टि से कालाहारी रेगिस्तान से घिरा एक स्थल-रुद्ध देश है।

- इसकी सीमा उत्तर-पूर्व में जाम्बिया एवं जिम्बाब्वे, उत्तर तथा पश्चिम में नामीबिया और दक्षिण व दक्षिण-पूर्व में दक्षिण अफ्रीका से लगती है।
- **राजधानी शहर:** गैबोरोन
- बोत्सवाना की जलवायु अर्ध-शुष्क है, हालांकि यह वर्ष के अधिकांश समय उष्ण और शुष्क रहती है।

- बोत्सवाना का सबसे ऊँचा स्थान त्सोडिलो हिल्स है।
- **प्रमुख नदियाँ:** महत्वपूर्ण नदियों में लिम्पोपो, ओकावांगो और शाशे सम्मिलित हैं, जबकि मोलोपो नदी दक्षिण अफ्रीका तथा बोत्सवाना के बीच भौगोलिक सीमा बनाती है।
- यहाँ विश्व की सबसे अधिक हाथी की जनसँख्या पाई जाती है।

Source:TH

रेल फोर्स वन: लौह कूटनीति का प्रतीक

सन्दर्भ

- भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी यूक्रेन की राजधानी कीव जाने के लिए पोलैंड से 'ट्रेन फोर्स वन' में सवार हुए।

परिचय

- फरवरी 2022 में रूसी आक्रमण के बाद यूक्रेन का हवाई क्षेत्र बंद होने के बाद से कीव आने वाले विदेशी गणमान्य लोग ट्रेन का उपयोग कर रहे हैं।

रेल फोर्स वन

- **ट्रेन की विशेषताएँ:** यूक्रेनी रेलवे (उक्रज़ालिज़्निस्या) द्वारा संचालित इस ट्रेन को नीले तथा पीले रंग से रंगा गया है और इसमें लकड़ी के पैनल, क्रीम एवं नीले रंग के पर्दे, चमड़े के सोफे, किंग-साइज़ बेड, दीवार पर लगे फ्लैटस्क्रीन टीवी जैसी शानदार सुविधाएँ हैं।
- **यात्रा विवरण:** ट्रेन पोलैंड के प्रेज़ेमिस्ल ग्लोनी स्टेशन से कीव तक लगभग 700 किमी की यात्रा करती है, जिसमें लगभग 10 घंटे का समय लगता है।
- **ऐतिहासिक उपयोग:** 2014 में रूस के नियंत्रण से पहले ट्रेन का प्रयोग शुरू में क्रीमिया आने वाले अमीर पर्यटकों के लिए किया जाता था।
- **कूटनीति का प्रतीक:** ट्रेन "आयरन डिप्लोमेसी" का प्रतीक बन गई है, यह शब्द यूक्रेन के सामरिक उद्योग मंत्री अलेक्जेंडर कामिशिन द्वारा प्रयोग किया गया था।
- **यूक्रेन के लिए महत्व:** ट्रेन नेटवर्क यूक्रेन के लिए महत्वपूर्ण है, युद्ध प्रयासों में सहायता करता है और सहायता तथा निकासी दोनों को परिवहन करता है।
- इसने संघर्ष के दौरान मनोबल बढ़ाने और जनसंपर्क संपत्ति के रूप में भी कार्य किया है।

Source:IE

पीएम-वाणी योजना

सन्दर्भ

- भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI) ने "पीएम-वाणी योजना के लिए नियामक ढांचे" पर दूरसंचार टैरिफ (70वां संशोधन) आदेश, 2024 का प्रारूप जारी किया है।

पीएम-वाणी योजना क्या है?

- प्रधानमंत्री वाई-फाई एक्सेस नेटवर्क इंटरफेस (पीएम-वाणी) को दूरसंचार विभाग ने 2020 में लॉन्च किया था।
- इस योजना का उद्देश्य देश में, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में मजबूत डिजिटल संचार बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के लिए सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट के प्रसार को बढ़ाना है।
- सरकार का लक्ष्य छोटे तथा सूक्ष्म उद्यमियों के लिए रोजगार बढ़ाना और वंचित शहरी गरीबों और ग्रामीण परिवारों को कम लागत वाला इंटरनेट उपलब्ध कराना है।

- यह योजना स्थानीय दुकानों और प्रतिष्ठानों को अंतिम इंटरनेट डिलीवरी के लिए वाई-फाई प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करती है जिसके लिए लाइसेंस की आवश्यकता नहीं होती है या पंजीकरण शुल्क नहीं लिया जाता है।

पीएम-वाणी पारिस्थितिकी तंत्र

- पीएम-वाणी इकोसिस्टम में चार भाग शामिल हैं: पब्लिक डेटा ऑफिस (PDO), पब्लिक डेटा ऑफिस एग्रीगेटर (PDOA), ऐप प्रदाता और सेंट्रल रजिस्ट्री।
  - PDO वाई-फाई हॉटस्पॉट स्थापित करता है और उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट एक्सेस प्रदान करता है।
  - PDOA, PDO को प्राधिकरण और लेखा सेवाएँ प्रदान करता है।
  - ऐप प्रदाता फ़ोन के नज़दीक उपलब्ध हॉटस्पॉट प्रदर्शित करता है।
  - सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ़ टेलीमैटिक्स द्वारा देख-रेख की जाने वाली केंद्रीय रजिस्ट्री ऐप प्रदाताओं, PDO और PDOA का विवरण रखती है।

चिंताएं

- 'कनेक्ट इंडिया' मिशन के अंतर्गत राष्ट्रीय डिजिटल संचार नीति, 2018 ने एक मजबूत डिजिटल संचार बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए 2022 तक 10 मिलियन सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट की तैनाती को सक्षम करने का लक्ष्य निर्धारित किया था।
- इसके अतिरिक्त, भारत 6G विजन ने डिजिटल इंडिया 2030 मोबाइल और ब्रॉडबैंड नीति उद्देश्यों के लिए 2022 तक 10 मिलियन सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट और 2030 तक 50 मिलियन का लक्ष्य भी निर्धारित किया है।
- हालांकि, वर्तमान में पीएम-वाणी हॉटस्पॉट संख्याएं लक्षित संख्याओं से बहुत कम हैं, जैसा कि NDCP, 2018 दस्तावेज़ और भारत 6G विजन दस्तावेज़ में परिकल्पित है।

Source: PIB

दीन दयाल स्पर्श योजना

सन्दर्भ

- डाक विभाग ने डाक टिकट संग्रह को बढ़ावा देने और इसे शिक्षा प्रणाली की मुख्यधारा में लाने के लिए दीनदयाल स्पर्श योजना नामक डाक टिकट संग्रह छात्रवृत्ति योजना शुरू की है।

दीन दयाल स्पर्श योजना

- इस योजना में उन मेधावी छात्रों को प्रति वर्ष 6,000 रुपये की छात्रवृत्ति देने का प्रस्ताव है, जिनका शैक्षणिक रिकॉर्ड अच्छा है और जिन्होंने फिलैटली को रूचि के रूप में अपनाया है।
- छात्रवृत्ति अखिल भारतीय स्तर पर प्रदान की जाएगी और प्रत्येक डाक सर्कल कक्षा 6, 7, 8 तथा 9 के 10 छात्रों को अधिकतम 40 छात्रवृत्तियाँ प्रदान करेगा।

पात्रता

- छात्रवृत्ति के लिए चयन फिलैटली लिखित क्विज़ में प्रदर्शन के आधार पर किया जाएगा।

- भारत में किसी मान्यता प्राप्त स्कूल का छात्र होना चाहिए। संबंधित स्कूल में फिलैटली क्लब होना चाहिए और उम्मीदवार को क्लब का सदस्य होना चाहिए।
- यदि स्कूल में फिलैटली क्लब नहीं है, तो उस स्कूल के किसी छात्र के नाम पर भी विचार किया जा सकता है, जिसका अपना फिलैटली डिपॉज़िट खाता हो।
    - डाकघरों में फिलैटली जमा खाता खोला जा सकता है।
- अभ्यर्थी को अंतिम निर्णायक परीक्षा में कम से कम 60 प्रतिशत अंक या समकक्ष ग्रेड/ग्रेड अंक प्राप्त करने होंगे।
    - अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों के लिए 5% की छूट होगी।

Source: PIB

पीएम-जनमन मिशन

सन्दर्भ

- केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जनमन) के अंतर्गत विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTGs) को सूचित करने और लाभ पहुंचाने के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया है।

पीएम-जनमन

- झारखंड के खूंटी जिले से जनजातीय गौरव दिवस (15 नवंबर, 2023) पर शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य PVTGs परिवारों को आवास, स्वच्छ जल, स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल तथा बेहतर सड़क और दूरसंचार कनेक्टिविटी जैसी आवश्यक सेवाएं प्रदान करना है।
- यह मिशन अनुसूचित जनजातियों के लिए विकास कार्य योजना (DAPST) के अंतर्गत वित्त वर्ष 2023-24 से 2025-26 तक 24,104 करोड़ रुपये (केंद्रीय हिस्सा: 15,336 करोड़ रुपये और राज्य हिस्सा: 8,768 करोड़ रुपये) के बजटीय परिव्यय के साथ 9 प्रमुख संबद्ध मंत्रालयों/विभागों से संबंधित 11 महत्वपूर्ण हस्तक्षेपों पर ध्यान केंद्रित करता है।

क्या आप जानते हैं?

- 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में अनुसूचित जनजाति (ST) की आबादी 10.45 करोड़ है, जिसमें से 18 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित 75 समुदायों को PVTGs के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- ओडिशा में PVTGs की सबसे बड़ी आबादी है, उसके बाद मध्य प्रदेश है।

Source:PIB

सुभद्रा योजना

सन्दर्भ

- ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन माझी ने सुभद्रा योजना के कार्यान्वयन की घोषणा की।

परिचय

- इस योजना के अंतर्गत 21 से 60 वर्ष की आयु की एक करोड़ गरीब महिलाओं को पांच वर्ष में 50,000 रुपये दिए जाएंगे।
- राखी पूर्णिमा दिवस और अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) पर 5,000 रुपये की दो किस्तों में कुल 10,000 रुपये प्रति वर्ष का भुगतान किया जाएगा।
- ऐसी महिलाएं जो किसी अन्य सरकारी योजना के तहत 1,500 रुपये या उससे अधिक प्रति माह या 18,000 रुपये या उससे अधिक प्रति वर्ष सहायता प्राप्त कर रही हैं, वे सुभद्रा के तहत सम्मिलित होने के लिए अपात्र होंगी।
- यह पैसा सीधे लाभार्थी के आधार-सक्षम एकल-धारक बैंक खाते में जमा किया जाएगा; उन्हें एक सुभद्रा डेबिट कार्ड भी जारी किया जाएगा।

Source: TH

पसमांदा मुस्लिम

सन्दर्भ

- ऑल इंडिया पसमांदा मुस्लिम महज़ (AIPMM) और अन्य मुस्लिम समूहों ने कम से कम 12 मुस्लिम जातियों को अनुसूचित जातियों में सम्मिलित करने की मांग की है।

परिचय

- भारत में मुसलमानों को सामान्यतः तीन श्रेणियों में बांटा गया है: अशरफ ('कुलीन' अभिजात वर्ग या 'सम्मानित लोग'), अजलाफ (पिछड़े मुसलमान) और अरज़ल (दलित मुसलमान)।
- 'पसमांदा' एक फ़ारसी शब्द है, जिसका अर्थ है 'पीछे छूटे हुए लोग' और इसका प्रयोग मुसलमानों में दबे-कुचले वर्गों का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जबकि उनके जानबूझकर या जानबूझकर बहिष्कृत किए जाने को रेखांकित किया जाता है।
- पसमांदा, पिछड़े, दलित और आदिवासी मुसलमानों के लिए एक साझा पहचान बन गई है।
- 'पसमांदा मुसलमान' शब्द का पहली बार प्रयोग 1998 में अली अनवर अंसारी ने किया था, जब उन्होंने पसमांदा मुस्लिम महाज़ की स्थापना की थी।
- पसमांदा मुसलमानों का कहना है कि समुदाय के अंदर उनकी भारी संख्या के बावजूद, वे नौकरियों, विधायिकाओं और सरकार द्वारा संचालित अल्पसंख्यक संस्थानों, साथ ही समुदाय द्वारा संचालित मुस्लिम संगठनों में कम प्रतिनिधित्व वाले हैं।
- पसमांदा की प्रमुख मांगों में जाति जनगणना कराना, वर्तमान आरक्षण श्रेणियों का पुनर्गठन और कारीगरों, शिल्पकारों तथा कृषि मजदूरों के लिए राज्य का समर्थन सम्मिलित है।

Source: IE

■■■■